आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-11-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग की सही समझ देकर, योग का महत्व समझाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, याद से ही तुम आत्माये पावन बन पावन दुनिया के मालिक बनेंगे.

इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार मुख्य सबजेक्ट्स है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा. इन चारों में दो मुख्य है ज्ञान और योग. ज्ञान से आत्मा को समझ मिलती है और योग से आत्मा पावरफुल बनती हैं. हम आत्माये ज्ञान स्वरूप बनकर ही बाबा से योग करती है. लेकिन योग से ही हमारी आत्मा में गुणों और शक्तिओं का खजाना भरता हैं. जिस के आधार से हम ईश्वरीय श्रीमत् को धारण कर सकते हैं. फिर सेवा में भी ज्ञान की तलवार में योग का जोहर भरने से ही सफलता प्राप्त होती हैं.

बाबा ने आज हमें याद का महत्व समझाते हुए कहा, १. याद से ही तुम्हें बहुत बड़ी आयु मिलती है, तुम निरोगी बनते हो. २. याद करने से तुम्हारे पाप कटते हैं. तुम्हारी आत्मा सच्चा सोना बन जाती हैं. तुम्हारी आत्मा से रजो-तमो की खाद निकल जाती है. तुम्हारी आत्मा कंचन बन जाती हैं. ३. याद से ही तुम पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे. ४. याद से ही तुम्हारा श्रृंगार होगा. ५. याद से ही तुम बहुत धनवान बन जायेंगे. याद से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो.

बाप हमें हर रोज मुरली से दो बाते याद दिलाते है - बाप और वर्सा.

जब हमारी आत्मा बाप को याद करती है तो हमारी आत्मा में लाइट और माइट भरती जाती हैं. आत्मा में लाइट आने से आत्मा में रहे विकारों की खाद निकलती जाती हैं. आत्मा दीपक जग जाता हैं. आत्मा सच्चे सोने की तरह क्लीन हो जाती हैं. आत्मा में माइट आने से आत्मा अपनी ही कर्मेन्दियों, मन और बुद्धि पर कंट्रोल कर सकती हैं. जिसे नेगेटिव और व्यर्थ संकल्पों क़ाबू में आते हैं. आत्मा श्रेष्ठ संकल्पों को धारण करती हैं. फिर जैसे कहा जाता है, जैसा मन वैसा तन. आत्मा में से नेगेटिव और व्यर्थ संकल्पों का किचड़ा समाप्त होने से काया भी निरोगी बन जाती हैं.

जब हमारी आत्मा वर्से को याद करती है तो हम स्वयं को सतयुग में पार्ट बजाते देखते हैं. आत्मा हर्षित होती हैं. हम अपने को श्रीकृष्ण और अन्य देवी-देवताओं के साथ स्वर्ग में देखते हैं. जैसा संग वैसा रंग. फिर उनके जैसे ही स्वभाव-संस्कार पवित्रता के, संतुष्टता के, हर्षित मुक्ता के हमारे में आते जाते हैं. हम आत्माये अभी कलयुगी देह में रहते हुए भी अन्दर से परिवर्तन होते जाते हैं, जैसे की हमारा श्रृंगार होता जाता हैं. जब हम वर्से को याद करते है तो अपने को स्वर्ग में खुब सम्पतिवान-धनवान देखते है. सच में यही याद हमारी आत्मा को पदमापदम भाग्यशाली बनाने वाली हैं.

बाप और वर्से की याद के लिए बाबा की आज की मुरली से कुछ महा-वाक्यों :

- रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझा रहे हैं. यहॉ बैठ तुम क्या करते हो? ऐसे नहीं सिर्फ शांति में बैठे हो. अर्थ सहित ज्ञान-मय अवस्था में बैठे हो.

- बाप को तो अपना शरीर नहीं है. हमारी आत्मा भी निराकार थी. फिर पुनर्जन्म में आते-आते पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बन गई है. अब फिर कंचन बनना हैं. बाबा की याद से ही हम आत्मा वापस पवित्र बन जायेगी.

- पावन बनकर हम आत्माये पावन दुनिया में चली जायेगी. यह है ही रावण की दुनिया. यहॉ से निकल कर वाया शांतिधाम होकर, सुखधाम पावन धाम में चले जायेंगे.

- बाबा कहते हैं मुझे याद करो क्योंकि में ही पतित-पावन हूँ, और कोई आत्मा ऐसे कह न सके. बाप ही कहते है मुझे याद करने से तुम पावन बन पावन दुनिया में चले जायेंगे.

- बेहद का ज्ञान देने वाला तो एक ज्ञान-सागर बाप ही हैं. बाबा हमारी आत्मा को ज्ञान के खजानों से, गुणों और शक्तिओं के खजानों से श्रृंगार कर रहे हैं.

आज मुरली में बाबा ने बताया की अभी हम भाग्यशाली आत्माओं की दोनों बाप मिलकर श्रृंगार कर रहे हैं. एक है बेहद का बाप और दूसरा है अलौकिक पिता. तो याद भी हमें दोनों बाप को करना पड़े. शुक्रिया बापदादा शुक्रिया, आप का लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.